रिकॉर्डः–कि(सी) ने अपना बनाके मुझको..... ॐ पिताश्री 20/9/1964
ओमशान्ति। यह रिकॉर्ड ने पहले–2 वचन सुनाया। अगर यह रिकॉर्ड न बजे तो भी हर्जा नहीं है; परन्तु रमत–गमत के लिए, शुरू करने के लिए बजाते हैं। और सभी विद्वान आदि तो(को) शास्त्र का कुछ न कुछ बुद्धि में रहता है। तुम्हारी बुद्धि में शास्त्र आदि की कोई बात नहीं। तुम बच्चों को तो पहले–2 खुशी होती है, हम किसके बने हैं! ऐसे नहीं कहेंगे, हम गुरु के बने हैं। बनना होता है बाप का। शरीर छोड़कर भी फिर बाप का बनना होता है। यहाँ भी एक ही बाप का बनना है। वेद–शास्त्र आदि किसकी दरकार नहीं। बाप को बच्चा पैदा होता है तो बाप समझते हैं मेरी मिल्कियत का यह मालिक है। यह सं(बंध) की बात है। तुम बच्चे भी जानते हो, हम वास्तव में पहले भी पारलौकिक बाप शिवबाबा के बच्चे हैं। पहले हम आत्मा हैं, पीछे हमको शरीर मिलता है। तुमको शरीर तो है। अब तुमको बेहद का बाप मिला है। उसने आकर अपना परिचय दिया है। तुम कहते हो– बाबा, हम आपके हैं। और कोई संबंध नहीं। बाप के बच्चे बने हो। यह कहते हैं– मैं कोई गुरु–गोसाईं नहीं हूँ। बोर्ड भी लगा हुआ है बी०के०कुमारियों का नाम। तो ज़रूर बाप भी होगा। लिखते हो, हम बी०के०कुमा(रियाँ) हैं। यह संबंध हुआ ना। माँ–बाप का संबंध चाहिए। गाते भी हैं– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। आत्मा को जैसे वो अविनाशी याद है। तुम मात–पिता..... हम आपके जब बालक बनेंगे तब हम वर्सा लेंगे। अभी तुम जानते हो हम मात–पिता के हैं। भल यहाँ से चले जाते हैं, फिर भी उनसे पूछो तो कहेंगे, ज़रूर यह हमारे मात–पिता हैं। हम शिवबाबा के बच्चे हैं तो ज़रूर बाप और वर्सा याद आता है। कोई पुस्तक आदि तुमको नहीं पढ़ाया जाता। तुमको सिर्फ निश्चय कराया जाता है। बाप के बने हो अब इसको याद करो। बाप कहते हैं– मेरे को याद करने से तुम ऐसा (ल०ना० के चित्र तरफ इशारा) बनोगे। कितनी सहज बात है। विशाल बुद्धि होना चाहिए। और तो कुछ नहीं समझाते, सिर्फ अपने कुल की ही बात बतलाते हैं, कैसे हम 84 के चक्र में आते हैं। बाकी वेद–शास्त्र आदि इन सब पढ़ने से तुमको छुड़ाते हैं। बाप को ही याद करते रहना है और ये भी बुद्धि में है सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। उसके आदि–मध्य–अंत को जानने से ही लाडले बच्चे, तुम ऊँच ते ऊँच स्वर्ग के मालिक बनते हो। तुमको सदैव के लिए हर्षितमुख बनाता हूँ। कितनी सहज बात है; परन्तु फिर भी भूल जाते हैं। क्या कारण है? माँ–बाप को बच्चे कब भूलते नहीं। बाप और वर्से को याद करो तो सदैव हर्षित रहेंगे। जब कोई दुख होता है तो बाप को ही याद करते हैं। ज़रूर बाप ने सुख दिया है। कोई दुख देते हैं तब कहते हैं– हाय बाबा! हाय भगवान! हर जन्म में हाय–2 करते आए हैं। अब तो तुम बच्चों को बिल्कुल सहज समझाते हैं। तुम भल तन्दरुस्त न भी हों, कितने भी बीमार हों तो भी तुम सर्विस कर सकते हो। जैसे बीमारी में मनुष्य को कहते हैं राम–2 कहो। तुम भी बीमारी में ही फिर और को बताओ शिवबाबा को याद करो। यह ज़रूर और को याद कराना पड़े। मरने की हालत में भी तुम और को यह नॉलेज दे सकते हो। परमात्मा के तुम बच्चे हो, उनको याद करो। शिवबाबा बेहद का बाप है। वो ही वर्सा देंगे। सर्विस का शौक होगा तो मरने समय भी किसको ज्ञान देंगे। ऐसे नहीं हॉस्पिटल में पड़े रहें और मुख बन्द हो जाय। मुख से कुछ न कुछ निकलता रहे। कितनी अच्छी अवस्था होनी चाहिए। बीमारी में भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। मित्र–संबंधी आवेंगे, उनको कहेंगे परमात्मा को याद करो। वो ही सबका रखवाला है; इसलिए शिवबाबा को याद करो। वो एक है। वर्सा भी सबको एक से मिलता है। लौकिक संबंध में वर्सा मेल को मिलता है। कन्या है ही 100 ब्राह्मणों से उत्तम। पवित्र को ही दान दिया जाता है ना। सन्यासी पवित्र है इसलिए उनको दान दिया जाता है। तुम कन्याएँ सबसे पवित्र हो; इसलिए कहते, हम कन्या को दान देते हैं। वो बड़ा दान समझते हैं। वास्तव में वो कोई दान नहीं। दान तो तुम करते हो।

कहते हैं– हम अपनी कन्या शिवबाबा को देते हैं। वहाँ तो कन्या को देते हैं कत्लेआम करने लिए। यहाँ कन्या को देते हैं स्वर्ग की महारानी बनने लिए; परन्तु कन्या भी ऐसी अच्छी पढ़ी–लिखी हो, अपने कुल (की) भी हो, जो समझाने से झट समझती जाए। सर्विसएबुल चाहिए। छोटे बच्चों को तो नहीं संभालना है। कोई को भी समझाना बड़ा सहज है। शिवबाप तुम्हारा बेहद का बाप है। चित्र सामने है। चित्र हैं सब एक/दो से अच्छे। देखो, ये ऐसा सतयुग का वर्सा पाय रहे हैं। इन ल०ना० को कहाँ से वर्सा मिला? कितनी सहज बात है। इसलिए बाबा बड़े चित्र भी बनवाय रहे हैं। अभी ये नाटक पूरा होता है। हमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया, अब वापस बाबा के पास जाते हैं, फिर नई दुनिया में आवेंगे। हमारा बाबा नई दुनिया का रचता है। उसका हमको मालिक बनाते हैं। आपको भी तरीका बतलाते हैं, बेहद बाप से सदा सुख का वर्सा तुमको कैसे मिलेगा। एक तो समझो, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा खाता हूँ, आत्मा चलता हूँ। ये बड़ी अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। देह–अभिमान टूट जाय। देह–अभिमानी को लौकिक संबंधी याद आवेंगे। देही–अभिमानी को पारलौकिक बाप की याद पड़ेगा। उठते–बैठते–चलते ये बुद्धि में रखना है मैं आत्मा हूँ। बाप के मत पर चलना है। शिवबाबा मत दे रहे हैं अपन को आत्मा समझो। मेहनत करनी है। सुख के (भागी) तो बनेंगे; परन्तु थोड़े में खुश न हो जाओ। भल सर्विस में तो जावेंगे; परन्तु एक मातेले बनो। मातेला उनको कहा जाता जो बापदादा को ही याद करते हैं। दूसरा कोई याद पड़ता तो वो सौतेले हो जाते हैं। बहुत हैं जिनको दोनों याद पड़ते रहते। यह बाप है अविनाशी स्वर्ग का वर्सा देने वाला। यह भी कुल है, वो भी कुल है। उनसे तो दुख ही मिलता है। अल्पकाल क्षणभंगुर सुख का वर्सा मिलता है। अब बुद्धि से जज करना है हम किस तरफ जावें– लौकिक तरफ वा पारलौकिक तरफ? बुद्धि कहती है पारलौकिक बाप के बनकर हम क्यों नहीं स्वर्ग तरफ जावें। लौकिक संबंध से जीते जी मरना है। वो जहन्नुम तरफ ले जाने वाले, यह है स्वर्ग में ले जाने वाला। रात–दिन का फर्क है। पारलौकिक बाप का बनने से स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यहाँ तो नर्क के मालिक बनते हैं। अब आत्मा कहती है बुद्धि को कहाँ छोड़ें? अपने शान्तिधाम, सुखधाम जावें या यहाँ जावें? वास्तव में 'या यहाँ जावें', यह उठना ही न चाहिए। यहाँ तो **JJ** रहे हैं। अब तो हम पारलौकिक बाप को कब छोड़ेंगे नहीं। यहाँ तुम बच्चे सन्मुख बैठे हो। तुम्हारा लौकिक संबंध कोई है नहीं। बुद्धि कहती है, हम तो बाबा के साथ मुक्तिधाम, शान्तिधाम में जावें। सवेरे उठकर ऐसे–2 बैठ विचार करने चाहिए। बैठने से बड़ा मज़ा है। अब किस तरफ जावें? खैंच किस तरफ की होनी चाहिए? बुद्धि कहती है स्वर्ग तरफ जाना चाहिए, नर्क तरफ क्यों जावें। यह माया बड़ा (धोखा) देती है। अभी तो तुम्हारे पास एम–ऑब्जेक्ट है। अभी तुम किनारे पर हो, जानते हो, इस तरफ तो दुख ही दुख है, इस तरफ 21 जन्मों का सुख है। बाप कहते हैं मेरे को याद करो; क्योंकि मेरे पास आना है, माया कहती है दुनिया तरफ आओ। कहाँ जावें? रास्ता तो मिला है। एक है स्वर्ग तरफ जाने का रास्ता, दूसरा है नर्क तरफ जाने का रास्ता। टिवाटा होता है ना! तीन गली के बीच में टिवाटा होता है। तो टिवाटा कहो तो भी ठीक है। अब हम किस तरफ जावें– एक गली है मुक्ति की, एक है जीवनमुक्ति की और एक है नर्क की? जैसे तीन (नदि)यों का संगम है। 3 वाटिकाएँ हैं। एक वाटिका में हम हैं। टिवाटे का मिसाल अच्छा आता है। अब कहा जावें? नर्क का तो विनाश होना ही है। यहाँ दुख बहुत है। अभी हम टिवाटे पर खड़े हैं। पीछे को नहीं हटेंगे। दुख की गली से निकाल बाबा ने टिवाटे पर खड़ा किया है। दुखधाम के गली से तो जन्म–जन्मांतर पास कर आए हो। अब (बुद्धि) कहती है मुक्ति–जीवनमुक्ति तरफ जावें। मुक्तिधाम में सदैव के लिए तो बै(ठना) न है। ऐसे नहीं, हम पार्ट से छूट जावें, आवें (ही नहीं)। पार्ट से छूटना हो (न)हीं सकता। ड्रामा अनुसार आवेंगे ज़(रूर)। फिर

मच्छरों सदृश मरेंगे। इतना दुख देखा है, फिर शान्ति–सुख भी देखना चाहिए। ड्रामा में बाबा ने वज़न ठीक रखा है। जिनका पार्ट ही थोड़ा है, आए, एक/दो जन्म लिए, यह गए। तुम अभी टिवाटे पर खड़े हो। वो शान्तिधाम, वो सुखधाम। अगर शांतिधाम जाने चाहते तो शान्तिधाम को याद करते रहो। मुक्तिधाम को याद तो करना पड़े ना। पिछाड़ी वालों को मुक्तिधाम में जास्ती रहने कारण मुक्तिधाम में ही जास्ती याद पड़ेगा। तुमको जीवनमुक्तिधाम याद पड़ता है– जल्दी हम जावें। न है तब तो चाहते हैं ना! वो चाहते हैं हम मुक्ति में ही रहें। अच्छा, बाप को याद करते रहो, इसमें भी कल्याण है। निर्वाणधाम में रहने चाहते हैं, सुखधाम नहीं आने चाहते, तो इसे(इससे) समझ जावेंगे इनका पार्ट नहीं देखता है। इस्लामी–बौद्धी आदि से कोई आय जो बहुत वहाँ रहने चाहेंगे। वो सुखधाम जाने नहीं चाहते। तुम तो सुखधाम जाने वाले टिवाटे पर खड़े हो। पुरुषार्थ करते हो। उनको सिर्फ तुम्हारा सच्चा योग ही पसंद आवेगा। अच्छा, बाप को याद करते रहो। चक्र को भी याद करने की दरकार नहीं। यह ज्ञान सब धर्मों लिए हैं। समझते हैं, ड्रामा अनुसार जिन्होंने जितना लिया है वो ही आकर अपना पद ले लेंगे। मुक्तिधाम जाने चाहते हैं तो बाप को याद करो। अरे! चाहो हम सदैव सुखी रहें तो वहाँ शान्ति भी है, सुख भी है। जो जिस तरफ का होगा उनको वो वर्सा लेना है। सर्व का मुक्ति–जीवनमुक्ति दाता तो बाप है ना। एक/दो जन्म लेने के होंगे तो इसमें ही सुख भी देखेंगे, दुख भी देखेंगे; जैसे मच्छर आया और गया। वो कोई अमूल्य जीवन नहीं कहेंगे। तुम तो सदैव हर्षित रहने वाले हो। तुम लाइट हाउस हो खड़े हो। दोनों रास्ता दिखाय सकते हो। चाहे मुक्तिधाम चलो, चाहे मुक्ति–जीवनमुक्ति दोनों को याद करो। इसमें शास्त्र आदि पढ़ने की कोई दरकार नहीं। कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है; क्योंकि सीढ़ी न चढ़ी है। छोटेपन में पढ़ना अच्छा होता है; क्योंकि बुद्धि अच्छी होती है। कोई की याद न रहती है जब तक शादी करे और बच्चा मिले। तुम सब कुमारियाँ हो गई हो। और कुछ करना न है, सिर्फ पढ़ाई में लग जाय, बस, बेड़ा पार है। यह तो जो विशाल बुद्धि न है उन्हों के लिए सच्ची गीता, झूठी गीता आदि कान्ट्रास्ट बताया जाता है। बाकी यह सब वेद–शास्त्र आदि हैं झूठी दुनिया के लिए। यह बातें बेहद का बाप ही समझाते हैं, जो फिर हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। चित्र भी है, हमको ऐसा बनना है। बाप कहते हैं इस पढ़ाई से तुम सो देवी–देवता बनेंगे। अभी यह खेल पूरा होना है। मनुष्य तो (घोर) अंधियारे में हैं। तुम अब सोझरे में हो। बाप ने आकर नींद से जगाया है। यह बुद्धि को, आत्मा को जगाया जाता है। बाप आ करके (ज)गाते, जागो, सुखधाम के लिए पुरुषार्थ करो। जो तुम्हारे कुल के होंगे वो आते रहेंगे, वृद्धि को पाते जावेंगे। तुम्हारी प्रजा कितनी बनती है, तुम हिसाब लगा सकते हो? नहीं। कोई कितना सुनते हैं, कोई थोड़ा सुन जाते हैं, हिसाब थोड़े ही निकाल सकते हैं। बड़ी माला, छोटी माला, साहुकार प्रजा कैसे बनती है, कौन बनते हैं, वो सब बुद्धि में है। मुख्य सूर्यवंशी महाराजा–महारानी कौन बनेंगे, फिर चंद्रवंशी कौन बनेंगे, कितनी प्रजा बननी है। सब बातें तुमको यहाँ बतलाई जाती हैं, सारे झाड़ अथवा सभी धर्मों के चक्कर की। बीज से कैसे डार–टार–पत्ते आदि निकलते हैं। अभी भी पत्ते निकलते रहते। वहाँ एकदम खाली हो जावेगा, फिर विनाश होना चाहिए। बड़ी लड़ाई में करोड़ों मरे होंगे, अनगिनत। यहाँ तो कितने खलास होंगे। बाकी थोड़े सतयुग में आकर राज्य करेंगे। अभी तो कितने मनुष्य हैं। अन्न ही इतना नहीं जो मनुष्य खा सके। कितना बाहर से अन्न आता है। तुम बच्चे जानते हो, बाबा आते ही है संगम पर। बाप समझाते हैं– बच्चे, शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना ही है। हर बात में राय पूछते जाओ। हर एक का हिसाब–किताब अपना–2 है। श्रीमत अविनाशी सर्जन से लेते जाओ। सबको बतावेंगे। समझाया जाता है यह दुनिया तो खलास हुई पड़ी है। अब बाप को याद करो तो बेड़ा पार हो जावेगा। पहली–2 मुख्य बात ही यह समझाओ, तुमको दो बाप हैं। अभी बॉम्बे में एग्जीविशन खोलते हैं। वहाँ भी पहले–2 मुख्य बात यह उठानी है, तुमको बाप कितने हैं?

भक्तिमार्ग में सभी प०पि०प० को याद करते हैं। तो दो बाप हुए हैं ना। पारलौकिक बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। लौकिक बाप से तो जन्म–जन्मांतर हद का वर्सा मिलता है। ये बाप आते ही है नरक का विनाश कर स्वर्ग की स्थापना करने। हम आपको भी रा(य) देते हैं। श्री–श्री से मिली हुई श्रीमत हम आपको भी देते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। बिल्कुल सहज है। भक्तिमार्ग के धक्के खाने से बाबा छुड़ाय देते हैं। बाप आते ही हैं सदैव हर्षाने के लिए, सदा सुखी–शान्ति बनाने लिए। यहाँ तो दोनों ही नहीं है। घर–2 में .....अशान्ति है। 50 बगुलों के बीच हंस अपने मौज में रहे, कमाल है। ज्ञा(न) न लेते हैं तो ज़रूर झगड़ते ही रहेंगे। उनसे फिर मिल जा(ना) नहीं पड़ता है। हंस का बुद्धियोग बाप से रहेगा। युक्तियाँ बहुत हैं। घर में रहने की युक्ति नहीं आती है तो पूछो। बाबा बहुत बतावेंगे। अच्छी श्रीमत देंगे। उनसे ..... मत कोई देने वाला होता नहीं। उनका नाम ही है श्रीमत भगवत गीता। ऐसी श्रेष्ठ मत देनी है जो स्वर्ग के मालिक बन जायँ। सिर्फ बाप और वर्से को याद करना है। जपना भी (नहीं) है। अच्छा!